भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में हस्तशिल्प कौशल (वस्त्र परिधान के विशेष सन्दर्भ में)

रेखा सूर्यवंशी[1]

शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उज्जैन, म.प्र., भारत

सारांश

हमारे देश में खूबसूरत हस्तशिल्प कलाओं की समृद्ध विरासत है। देश के अधिकतर राज्यों की अपनी अनोखी शिल्प परम्परा है। जो स्थानीय संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली को अभिव्यक्त करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में वस्त्र एवं हस्तशिल्प कौशल का अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में किया गया है। हस्तशिल्प कौशलों में वस्त्रों पर की जाने वाली कढ़ाई का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जो भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कढ़ाई, बुनाई, बंधेज, बाटिक, ब्लॉक छपाई तथा हथकरघा परंपराएँ केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि अनुभवजन्य एवं लोकज्ञान की जीवंत धरोहर हैं। इसके अंतर्गत कढाई में बंगाल की कांथा, बिहार की सुजनी, कर्णाटक की कसूती, पंजाब की फुलकारी, बाग, चोप, जम्मू कश्मीर की कशीदाकारी, उत्तर प्रदेश की चिकनकारी आदि सम्मिलित है। इन हस्तशिल्प कौशलों को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित किया गया है। इन कलाओं ने न केवल भारत की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाया है, बल्कि यहाँ के लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान किए हैं।

मुख्य शब्दः हस्तशिल्प, भारतीय ज्ञान परंपरा, कढ़ाई, वस्त्र, सांस्कृतिक विरासत, आत्मनिर्भरता

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल दार्शनिक विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवनोपयोगी कलाओं, शिल्पों और कौशलों में भी निहित है। प्राचीन ग्रंथों में शिल्प, तंतु, वस्त्र निर्माण तथा कारीगरों के संगठन का उल्लेख मिलता है, जिससे स्पष्ट होता है कि हस्तकौशल को ज्ञान का अभिन्न अंग माना गया था। यह जितना राष्ट्र की पहचान का प्रतिनिधित्व करती है। उतना ही हस्तशिल्प कारीगरों को रोजगार के अवसर प्रदान करती है साथ ही उन्हें अपनी आजीविका चलाने का स्त्रोत भी है। हस्तशिल्प कौशल भारत की सांस्कृतिक परंपरा की अमूल्य विरासत है और हस्तशिल्प उद्योग भारत की सांस्कृतिक परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हस्तशिल्प आज भी भारतीय संस्कृति और समाज का एक रंग बिरंगा पक्ष है। हस्तशिल्प भारत के लोगों की संस्कृति में मानवीय इतिहास के आरंभ से जुड़ी हुई है। मनित कौर (२०२१) द्वारा पंजाब में "पंजाबी संस्कृति की पारंपरिक विरासतः फुलकारी, बाग और चोप कढ़ाई" का अध्ययन किया किया गया और उनके अनुसार फुलकारी, बाग और चोप कढाई पंजाब की हस्तशिल्प कौशल की विरासत है। यहाँ की महिलाये इन तीनो कढाई को मुख्य रूप से करती है। पंजाब में होने वाले कोई भी त्यौहार और संस्कृतिक कार्यक्रमों में इन तीनो कढाई से बने हुए वस्त्र ही पहनते है। साथ ही इन्होने पाया की महिलाये अपनी कढाई करने की इस हस्तकौशल कला के कारण आत्मनिर्भर भी है।

भारतीय समाज में शिल्प और कला को 'सृजनात्मक कर्म' के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त थी। वस्त्र निर्माण, कढ़ाई, बुनाई तथा रंगाई केवल उपयोगिता की वस्तुएँ नहीं थीं, बल्कि सामाजिक पहचान, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम थीं। इस प्रकार हस्तशिल्प भारतीय लोकज्ञान और परंपरागत तकनीकी ज्ञान का सजीव उदाहरण है।

हस्तकला का अभिप्राय

हस्तकलाओं से अभिप्राय हाथ से बनायीं जाने वाली कलात्मक वस्तुओं एवं कलाकृतियों से है। जो हस्तशिल्पियों अथवा कारीगरों द्वारा पारंपरिक तकनीक से तेयार की जाती है। इसके अंतर्गत सजावटी सामान, संगमरमर की सुन्दर एवं कलात्मक मुर्तिया, बंधेज, कढ़ाई, बुनाई, पेपरमेशी, मिट्टी के बर्तन बनाना, पेंटिंग, खिलोने बनाना आदि सभी प्रकार का कलात्मक सामान आता है। इन कलाओं का ज्ञान प्रायः गुरु–शिष्य परंपरा या पारिवारिक परंपरा द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होता रहा है।

वस्त्र एवं भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय ज्ञान परम्परा में वस्त्र केवल शरीर आवरण का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति, पर्यावरण और जीवन मूल्यों का प्रतीक रहे हैं। प्राचीन काल से

[1]Corresponding author

ही भारत में सूती, रेशमी एवं ऊनी वस्त्रों का निर्माण स्थानीय जलवायु और आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता रहा है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित सादगी, स्वदेशी भावना और प्रकृति के अनुरूप जीवनशैली है। भारतीय परंपरा में वस्त्र आचार, संस्कार और सामाजिक स्थिति का प्रतीक रहे हैं। चरखा और करघा आत्मनिर्भरता के प्रतीक माने गए। हस्तनिर्मित वस्त्रों ने स्वदेशी भावना को सुदृढ़ किया।

भारत में प्राचीन समय से ही कपड़ों पर विभिन्न प्रकार की हस्तकला विधियों का उपयोग किया जाता है। रामरतन गुरु, ज्योति रानी, उशमा सैनी (अप्रैल २०२३) के अध्ययन के अनुसार प्राचीन काल से ही, भौगोलिक क्षेत्रों और जलवायु परिस्थितियों में, वेशभूषा और वस्त्रों ने दुनिया में एक प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया है। लोगों ने स्वाभाविक रूप से जो भी सामग्री सुविधाजनक रूप से उपलब्ध थी उसका उपयोग किया। समय के साथ, वस्त्रों और परिधानों की डिज़ाइनिंग में कारीगरों के हाथों में हस्तशिल्प कौशल कला विकसित हुई। वास्तव में, समकालीन वस्त्र और वेशभूषा हमारी भावना, हमारी चेतना और उस समाज की जीवंतता को दर्शाते हैं जिसमें हम रहते हैं। इस तरह भारत में कपड़ा और फैशन डिजाइनिंग का विकास हुआ है। प्रागैतिहासिक काल से ही कारीगरों और शिल्पकारों ने कपड़ा डिजाइनिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हस्तशिल्पकारो द्वारा कला का कार्यात्मक उपयोग ने कलात्मक डिजाइनों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस समीक्षा अध्ययन में शोधकर्ताओं ने भारतीय पारंपरिक वेशभूषा और वस्त्र ज्ञान को व्यक्त किया है। इससे प्रत्येक व्यक्ति प्राचीन भारतीय पारंपरिक वेशभूषा और वस्त्र ज्ञान को आसानी से समझ सकेगा।

अतः भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति के साथ संतुलन का विशेष महत्व है। प्राकृतिक रंगों का उपयोग, हाथ से बुनाई, स्थानीय संसाधनों का प्रयोग और पर्यावरण अनुकूल तकनीकें सतत विकास की अवधारणा को पुष्ट करती हैं।

वस्त्रों पर प्रमुख हस्तशिल्प तकनीकें

घर की सजावट में वस्त्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में प्राचीन समय से ही कपड़ों पर विभिन्न प्रकार की हस्तकला विधियों का उपयोग किया जाता है। गृहिणी अपने हस्तशिल्प कौशल के द्वारा वस्त्रों से विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण कर सकती है।

बंधेज

बंधेज एक प्राचीन अवरोधक रंगाई विधि है, जिसमें वस्त्र पर धागों से गांठ बाँधकर रंगाई की जाती है। इससे वस्त्र पर आकर्षक नमूने बनते हैं। राजस्थान और गुजरात में यह कला विशेष रूप से प्रचलित है।

हस्तशिल्प कला के अंतर्गत बंधेज एक महत्पूर्ण कला है। बंधेज रंगाई कपड़ों पर नमूना बनाने की यह एक प्राचीन विधि है। भारत तथा अफ्रीका इस कला के अग्रणी देश है लेकिन विश्व के अन्य देशों जैसे जापान में यह कला प्रचलित है जिसे शिवरी कहते हैं। भारत के बंधेज रंगाई युक्त परिधान विदेशी फैशन में स्थान पा चुके हैं। इंग्लैंड में बांधनी बुंदकीदार स्कार्फ एवं रुमालों के रूप में काफी प्रचलित है। इसमें कारीगर अपने हाथो के द्वारा रंगाई का कार्य पूर्ण करते है। इस कला का उपयोग राजस्थान में अधिकतर किया जाता है। राजस्थान में इसे बांधनी भी कहते है। यह कला रोजगार का बहुत ही अच्छा स्त्रोत है। बंधेज एक प्रकार की अवरोधक रंगाई है। रंगाई की इस विधि द्वारा साड़ी, दुपट्टे, सलवार सूट, गाउँन, बेडशीट, परदे, विभिन्न प्रकार के कव्हर आदि रंगें जाते है। इस विधि में सर्वप्रथम वस्त्र पर नमूने बनाये जाते है। फिर धागे की सहायता से टाइट गांठे बाँधी जाती है। जिससे धागे से बंधे स्थानों पर रंग नहीं चढ़ता है। और शेष वस्त्र रंग जाता है। बंधेज के रंग को पानी में डालकर उबाला जाता है। और उबलते हुए रंग में गांठ बंधे हुए वस्त्र को 15 मिनट तक उबालते है और बीच–बीच में वस्त्र को लकड़ी की कड़छी से हिलाते रहते है। उसके बाद कपडे को रंग में से निकाल कर साफ़ पानी से धोकर रंगे हुए वस्त्र को सुखाते है। तत्पश्चात वस्त्र की गांठ खोलकर वस्त्र पर प्रेस करते है। इस विधि से रंगे हुए वस्त्र बहुत ही सुन्दर और आकर्षक दिखाई देते है।

बाटिक

बाटिक छपाई हस्तशिल्प की वह कला है जिसमे कपड़े पर मॉम लगाकर विशेष विधि द्वारा रंगी जाती है। बाटिक मूलत जावा एवं सुमात्रा की कला है जावा में इसे आम्वाटिक कहा जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है मोम की बूंदे द्वारा चित्रण। इसमें विशेष प्रकार के बने पात्रों में पतली टोटी द्वारा पिघला हुआ मोम वस्त्र पर टपका कर चित्रांकन करने के पश्चात वस्त्र को रंगा जाता है। बाटिक में मोम वाले भाग पर रंग नहीं चढ़ता है। यदि रंग प्रवेश करता भी है, तो मोम की दरार में से प्रविष्टि ये रंग भी रेखाएं वाटिका के नमूने को एक अनूठा सौंदर्य प्रदान करती है। जावा में बाटिक हेतु सूती वस्त्र का उपयोग किया जाता है। रंगाई की इस विधि द्वारा साड़ी, दुपट्टे, सलवार सूट, गाउँन, बेडशीट, परदे, विभिन्न प्रकार के कव्हर आदि रंगें जाते है।

ब्लॉक छपाई

यह हाथ से लकड़ी के ब्लॉक द्वारा वस्त्रों पर छपाई की प्राचीन विधि है। हाथो द्वारा वस्त्रों पर नमूनों को छापने की यह सबसे प्राचीन विधि है। इस विधि से साड़ियां, दुपट्टे, टेबल क्लॉथ, चादर आदि छपे हुए वस्त्र बहुत ही सुन्दर और आकर्षक लगते है। उज्जैन मध्य प्रदेश की भैरवगढ़ रंगाई कला में ब्लाक छपाई का विशेष स्थान है। ब्लॉक द्वारा छपाई करने के लिए जितने रंगों की छपाई करनी हो, उतने रंगों के अलग–अलग पेस्ट तैयार किए जाते हैं। हाथों द्वारा ब्लॉक छपाई के लिए एक स्थिर मजबूत एक ही सतह वाली टेबल लेकर मोटे कंबल से ढका जाता है। इस कंबल को रंग तथा पानी से खराब होने से बचाने के लिए उस पर ग्रे क्लॉथ या पानी अवरोध वस्त्र बिछाते हैं। अब छपाई वाले वस्त्र को टेबल पर रखकर एक सिरे से छपाई आरंभ करते हैं। नमूने के ब्लॉक को रंग वाले पेड़ पर दबाकर पुनः वस्त्र पर रखकर दबाया जाता है। जिससे नमूना वस्त्र पर छप जाता है। एक रंग की छपाई के बाद सूखने के लिए छोड़ देते हैं। एक रंग सूखने के बाद दूसरे रंग की छपाई की जाती है। छपे हुए वस्त्र को 12 से 24 घंटे तक हवा में लटका कर छोड़ देते हैं।

कढ़ाई

कढ़ाई वस्त्र अलंकरण की प्राचीन कला है, जिसमें सुई और धागे द्वारा डिजाइन तैयार किए जाते हैं। भारत के विभिन्न राज्यों की अपनी विशिष्ट कढ़ाई परंपराएँ हैं। कढ़ाई की कला को हस्त कौशल के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। यह वस्त्र की सजावट की वर्षों पुरानी विधि है। विश्व भर में घर की सजावट की वस्तुओं पर कढ़ाई की कला देखी जा सकती है। रोजमर्रा की वस्तुओं जैसे बिस्तर की चादर और मेजपोश आदि को भी कड़ाई से सजाया जाता रहा है। रामरतन गुरु, ज्योति रानी, उशमा सैनी (२०२३) के अध्ययन के अनुसार भारतीय विरासत जिसमें भारतीय संस्कृति और कढ़ाई शामिल है, दुनिया भर में किसी भी अन्य देश की तुलना में सबसे विविध और विविधता से भरी है। भारतीय संस्कृति में विभिन्न धार्मिक और नैतिक मूल्य समाहित हैं जो किसी अन्य देश में नहीं पाए जाते हैं। प्रत्येक राज्य की अपनी अनूठी संस्कृति, परंपराएं और धर्म हैं जो देश को अन्य देशों से अलग बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और संस्कृति विविधताओं को कई गुना बढ़ा देती है। भारतीय संस्कृति और भारतीय कला विशेष रूप से भारतीय कढ़ाई अपनी मौलिकता और विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं।

कढ़ाई के केंद्र

भारत के प्रत्येक क्षेत्र के अपने डिजाइन और कढ़ाई के स्वरूप होते हैं। वस्तुतः कोई भी ऐसे डिजाइन या तकनीक नहीं है। जो भारतीय नमूनों में शामिल नहीं की गई है। कश्मीर में प्राकृतिक नमूने शामिल होते हैं। रेशम का काम, मोती, जरदोजी आदि का काम कशीदाकारी की शैलियों में है। जरदोजी में सोने व चांदी के तार का प्रयोग होता है। राजस्थान व गुजरात की कढ़ाई में ज्यामिति नमूने देखने को मिलते हैं, जिससे शीशे, सीप, और मोतियों का प्रयोग होता है। ये अपने गोट के काम के लिए भी प्रसिद्ध है। पंजाब की कढ़ाई फुलकारी के नाम से जानी जाती है। इसमें फलों के नमूने ज्यामितीय रूप में नजर आते हैं। यूरोप की 'लाइन स्टिच' विभिन्न रूपों में प्रयोग की जाती है। उड़ीसा व आंध्र प्रदेश की कढ़ाई कसूती के नाम से जानी जाती है। इसमें मंदिर की आकृतियां दिखाई देती है। इसमें पुरानी चाइनीस

नीडल वर्क का प्रभाव दिखता है। बंगाल की कढ़ाई कांथा के नाम से जानी जाती है। मणिपुर की कढ़ाई भी कांथा व सुजनी से मिलती– जुलती है। हिमाचल प्रदेश के चंबा रुमाल जो रास मंडल और कृष्णा के नमूने दर्शाते हैं। इनका प्रयोग विभिन्न धार्मिक अवसरों पर किया जाता है। उत्तर प्रदेश के लखनऊ की महीन चिकनकारी जिसमें बेल, लताये, फूलों के नमूने का प्रयोग होता है। इस कढ़ाई में महीन कपड़े की उल्टी तरफ कढ़ाई की जाती है, जो एक परछाई के रूप में सीधी तरफ दिखाई देती है।

भारत की प्रमुख कढ़ाई

बंगाल की कांथा

पश्चिम बंगाल कांथा कढ़ाई के लिए मशहूर है। यह एक पुरानी व पारंपरिक लोक कला है। बंगाल की अधिकतर महिलाएं इस कढ़ाई को करती है। पश्चिम बंगाल में कांथा कढ़ाई के मुख्य केंद्र हैं हुगली, जैसोर ,फरीदपुर आदि। इस कढ़ाई के लिए आमतौर से काला, हरा, गहरा नीला या लाल रंग का प्रयोग होता है। पारंपरिक रूप से कपड़े का रंग सफेद होता है? परंतु अब हल्के रंगों के कपड़ों का भी प्रयोग होने लगा है। इस कढ़ाई में पशु पक्षी, मछली, पानी, नाचता हुआ मोर, भागता हुआ हिरण, मोर, हाथी, घोड़ा आदि का प्रयोग किया जाता है। इस कढ़ाई में मुख्य स्टिच के रूप में रनिंग स्टिच का उपयोग होता है। स्टेम और सैटिन स्टिच का उपयोग भी किया जाता है।

बिहार की सुजनी

बिहार में भी महिलाएं कांथा के समान ही कंबल पर कढ़ाई करती हैं। इन कंबलों को बिहार की सुजनी कहते हैं। कांथा की तरह ही इसमें भी पुरानी साड़ियों को एक के ऊपर एक रखकर साथ में सिला जाता है। इस कंबल को फिर रंगीन धागों से कढ़ा जाता है। सुजनी में भी प्रतिदिन के दृश्य नमूनों के रूप में प्रयोग होते हैं। जैसे पतंग उड़ाते हुए बच्चे, दुल्हन और उसकी पायल, फल और चोंच मारता हुआ पक्षी, आदि, कुछ धार्मिक दृश्य जैसे गोपियों के साथ कृष्ण भगवान के डिजाइन भी कढे जाते हैं।

कर्नाटक की कसूती

कसूती कर्नाटक की प्रसिद्ध कढ़ाई है। 17वीं और 18वीं शताब्दी में महिलाओं द्वारा कढ़ाई की जाती थी। डिजाइन के लिए इमारतें प्रेरणा की स्रोत है। कसूती उत्पादित करने वाले मुख्य क्षेत्र हैं– धरवाड़, बीजापुर, बेलगाम आदि। इन कड़ाई द्वारा बनाई गई वस्तुएं अब व्यापारिक रूप से सराही जाने लगी है। कसूती में लाल, नारंगी, बैंगनी, हरा, पीला और नीला रंग का उपयोग किया जाता है। कसूती के डिजाइन बहुत ही रुचिकर होते हैं। कसूती के डिजाइनों का क्षेत्र संरचनात्मक और पौराणिक से लेकर उसे इलाके के खूबसूरत फूल पत्तियों और पशु पक्षियों तक विस्तृत है। संरचनात्मक कला से प्रेरित गोपुरम, पालकी और रथ के डिजाइन होते हैं, पशु जेसे हाथी, बैल, नंदी, घोड़ा, मोर, तोता, हंस, गिलहरी और हिरण का भी प्रयोग किया जाता है। कुछ पेड़ पौधों के नमूने जैसे कमल, चमेली, अंगूर आदि भी कसूती में देखने को मिलते हैं। इस कढ़ाई में बेक स्टिच और क्रॉस स्टिच का उपयोग किया जाता है।

उत्तर प्रदेश की चिकनकारी

चिकनकारी उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर की प्रसिद्ध कढ़ाई है चिकनकारी कि कल दिल्ली आगरा बनारस और कानपुर के इलाकों में भी बहुत ही लोकप्रिय है चिकनकारी खादी के देशों में भी निर्यात होती है चिकनकारी में मुख्य रूप से कढ़ाई करने के लिए सफेद सात पर धागे का प्रयोग होता है परंतु आजकल लोगों की पसंद के अनुसार दोनों रंगीन कपड़े और धागे का भी प्रयोग किया जाने लगा है चिकनकारी उत्पाद बनाने के लिए कई प्रकार के हल्के रंग जैसे नीला हरा गुलाबी आदि रंगों का प्रयोग होता है कभी–कभी गहरी और चमकदार रंग जैसे लाल पीला अधिक का भी उपयोग में लाया जाता है चिकनकारी में आमतौर से फूलों के डिजाइन होते हैं जैसे अलंकारिक फूल बेल फल जैसे आम अंगूर बादाम आदि कभी–कभी पक्षी जैसे मोर और तोता भी कढ़ाई में बनाए जाते हैं चिकनकारी में डाकू का बहुत ही रुचि का संयोजन होता है इसमें दो प्रकार के टांके होते हैं सपाट और उभरा हुआ सपाट विधि में हियरिंग बन ताकि का प्रयोग होता है कढ़ाई में उभरे हुए स्टाइल में कुछ विशेष ताको का

इस्तेमाल किया जाता है जो इस चीज को भरा हुआ प्रभाव देते हैं जिससे स्टेज कपड़े की सतह पर उबले हुए नजर आते हैं बखिया जाली वर्क खटाऊ मुर्गी फंदा आदि टांगों का उपयोग किया जाता है चिकनकारी कढ़ाई हमेशा से सफेद मखमल के कपड़े पर सफेद धागे से किया जाता था परंतु आजकल हर प्रकार की सूती कपड़े जैसे पायल चौंबरे अरगंडी आदि पर किया जाने लगा है चिकनकारी कड़ाई से साड़ी कुर्ती आदमियों की लंबी जैकेट रुमाल मैच पोस्ट कुशन कवर पर दे आदि बनाए जाते हैं

पैठणी और कांजीवरम साड़ियाँ

बुनकर परंपरा की धरोहर– महाराष्ट्र की पैठणी और तमिलनाडु की कांजीवरम साड़ियाँ भारतीय हथकरघा परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं। रेशम और जरी के प्रयोग से निर्मित ये साड़ियाँ केवल परिधान नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक हैं। इनका ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है।

पैठणी

पैठणी साड़ी, महाराष्ट्र की पारंपरिक साड़ी है। यह बहुत महीन रेशम से बनी होती है। इसे हाथों से बनाया जाता है। इसलिए यह हस्तशिल्प कौशल, भारत की विरासत के रूप में जानी जाती है। पैठणी साड़ी बनाने के लिए बुनकर रेशम और सोने के धागों का उपयोग करते है। इसीलिए पैठणी साड़ी को भारत की सबसे महंगी साड़ियों में से एक माना जाता है। यह साड़ी, महाराष्ट्र के औरंगाबाद ज़िले के पैठण शहर के नाम पर रखी गई है।

कांजीवरम साड़ी

कांजीवरम साड़ी, तमिलनाडु के कांचीपुरम शहर में बुनी जाने वाली सिल्क साड़ी है। इसे कांचीपुरम साड़ी भी कहा जाता है। कांजीवरम साड़ी, दक्षिण भारत की खास पहचान है। यह साड़ी अपनी चमकदार रेशमी बनावट और जरी के काम के लिए जानी जाती है। कांजीवरम साड़ी को खास मौकों पर पहना जाता है। कांजीवरम साड़ी को बनाने के लिए अच्छी क्वालिटी के रेशम का इस्तेमाल किया जाता है। कांजीवरम साड़ी में शुद्ध सोने या चांदी की ज़री होती है। कांजीवरम साड़ी को भारतीय परंपरा में मूल्यवान तोहफ़े के रूप में भी दिया जाता है।

महेश्वरी साड़ियाँ

महेश्वरी साड़ियाँ भारतीय शिल्प कौशल और विरासत का सच्चा प्रतीक हैं। इन उत्कृष्ट वस्त्रों का इतिहास सदियों पुराना है और परंपरा और समकालीन शैली के अनूठे मिश्रण से ये आज भी दुनिया भर के फैशन प्रेमियों को आकर्षित करती हैं। महेश्वरी साड़ियों का नाम भारत के मध्य प्रदेश राज्य के महेश्वर शहर से लिया गया है। यहाँ पीढ़ियों से इन साड़ियों की बुनाई होती आ रही है। ये साड़ियाँ पारंपरिक रूप से रेशम और सूती धागों के मिश्रण से बुनी जाती हैं। महेश्वरी साड़ियाँ अपनी मजबूती, हल्केपन और दोनों तरफ से पहनी जा सकने वाली बॉर्डर के लिए प्रसिद्ध हैं, जो पारंपरिक हथकरघा पर बुनी जाती हैं। माहेश्वरी साड़ियों में भव्यता लाने के लिए ज़री, या धातु के धागे का अक्सर उपयोग किया जाता है। ज़री का काम बॉर्डर, पल्लू और कभी–कभी पूरी साड़ी पर भी देखा जा सकता है। यह उ|ोग आज भी हज़ारों स्थानीय बुनकरों, विशेषकर महिलाओं को रोजगार और आत्मनिर्भरता प्रदान करता है।

अतः हस्तशिल्प कौशल भारतीय ज्ञान परंपरा का व्यावहारिक और जीवंत स्वरूप है। यह केवल कला नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक निरंतरता का आधार है। भारत के विभिन्न राज्यों की कढ़ाई और बुनाई परंपराएँ इस ज्ञान विरासत को संरक्षित करती हैं। वर्तमान समय में जब आत्मनिर्भरता और सतत विकास पर बल दिया जा रहा है, तब भारतीय हस्तशिल्प कौशल सांस्कृतिक संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में हमारे देश में खूबसूरत हस्तशिल्प कलाओं की समृद्ध विरासत है। देश के अधिकतर राज्यों की अपनी अनोखी शिल्प कला है। इन कलाओं से जुडी वस्तु संबंधित समुदायों की संस्कृति का अहम् हिस्सा है। हस्तशिल्प कौशलों में वस्त्रों पर की जाने वाली कढ़ाई एवं हथकरघा द्वारा बुनाई करके बुनी गयी साड़ियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जो भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह कढाई बंगाल की कांथा, बिहार की सुजनी, कर्णाटक की कसूती, पंजाब की

फुलकारी, बाग, चोप, जम्मू कश्मीर की कशीदाकारी, उत्तर प्रदेश की चिकनकारी आदि सम्मिलित है। इन हस्तशिल्प कौशलों को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित किया गया है और इन कौशलों से शिल्पकार आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनते है। भारतीय अर्थव्यवस्था में भी इस क्षेत्र का प्रमुख योगदान है। यह देश की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी सहायक है। यह न सिर्फ देश के अधिकतर जगहों में लाखों शिल्पकारों के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं। बल्कि ऐसी गतिविधियों से जुड़ने वाले नए लोगों के लिए भी प्रेरणादायक है, क्योंकि इन कलाओं ने न केवल भारत की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाया है, बल्कि यहाँ के लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान किए हैं। आज भारतीय हस्तशिल्प कौशल को कई सारे ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से पहचाना जाने लगा है।

सन्दर्भ सूची

शर्मा, करूणा. आवास एवं आंतरिक सज्जा (पेज न. 196). शिवा प्रकाशन.

Kaur, M. (2021, January). Traditional and technical assets of Punjabi culture: Phulkari, bagh and chope embroideries. In Recent trends in traditional and technical textiles (pp. 145–154). Springer. https://doi.org/10.1007/978-981-15-9995-8_13

चौहान, प. (2018). भारतीय कढ़ाई में प्रमाण पत्र (pp-5–8). राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान. https://www.nios.ac.in/media/documents/vocational/Embroidery-Hindi-628

योजना विकास को समर्पित. (2019, अप्रैल). हस्तशिल्प और वस्त्र – भारत का गौरव. योजना, ISSN 0971-8397, 5. http://yojana.gov.in/Hindi%20Yojana-April%202019.pdf

Handicrafts of India. https://testbook.com/static-gk/handicrafts-of-india

https://hindiarise.com/indian-handicrafts-upsc-in-hindi/

Guru, R., & Saini, U. (2023, April). Study on famous ancient traditional Indian costumes & textiles. International Journal of Engineering Trends and Technology, **8(3)**: 953–960. https://doi.org/10.31031/TTEFT.2023.08.000686

Guru, R., Rani, J., & Saini, U. (2023, February). To study the Indian heritage of textile embroidery & creative design techniques process. In Techniques and innovation in engineering research (**5**: 158–171). B P International U K. https://doi.org/10.9734/bpi/taier/v5/4611C

Bhuvad, D. (2023). The elegance of Maheshwari sarees: A timeless Indian tradition. Ingle Saree House. https://www.ingalesareehouse.com/blogs/maheshwari-sarees/the-elegance-of-maheshwari-sarees-a-timeless-indian-tradition

https://msbrijuniversity.ac.in/assets/uploads/newsupdate/Paithani.pdf

https://www.google.com/search?q=kanjivaram+sarre+in+hindi